

बांग्लादेश की राजनीतिक उथल-पुथल और भारत पर इसका प्रभाव

प्रलिस के लयि:

[मुद्रासफीति](#), [युरोपयिन युनयिन](#), [भारत-बांग्लादेश संबंघ](#), [बांग्लादेश मुकतियुद्ध 1971](#), [अखौरा-अगरतला रेल संपरक](#)

मेन्स के लयि:

भारत-बांग्लादेश संबंघ, द्वपिकषीय, कषेत्रीय और वैश्वकि समूह तथा भारत से जुड़े समझौते और/या भारत के हतिं को प्रभावति करने वाले समझौते ।

[स्रोत: द हद्रि](#)

चरचा में क्यौं?

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना का इस्तीफा दकषणि एशियाई भू-राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ है । वरिध प्रदर्शनों के बीच देश छोड़कर भारत में शरण लेने के बाद बांग्लादेश की स्थरिता और भारत के साथ उसके संबंघों पर सवाल उठने लगे हैं ।

- इस उथल-पुथल के न केवल बांग्लादेश के लयि बल्कि [भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा](#) हेतु भी दूरगामी परणाम हो सकते हैं ।

बांग्लादेश की वर्तमान स्थरिति क्या है?

- वरिध प्रदर्शन और अशांति: बांग्लादेश में नौकरी कोटा के मुद्दे पर वरिध प्रदर्शन जारी है, जो सत्तावादी नीतियों और वपिकष के दमन से प्रेरति है, जिसके कारण काफी अशांति पैदा हो गई है, जो वर्ष 2008 में शेख हसीना के कार्यकाल के बाद से सबसे बड़ी अशांति है ।
- आर्थकि चुनौतियाँ: शेख हसीना के जाने से [कोविड-19 महामारी](#) से देश की आर्थकि सुधार को लेकर चिंताएँ पैदा हो गई हैं, जो पहले से ही बढ़ती [मुद्रासफीति](#) और [मुद्रा अवमूलयन](#) से प्रभावति है ।
- राजनीतिक परद्रिश्य: बांग्लादेश की सेना अंतरमि सरकार बनाने के लिए तैयार है, जो स्थरिति की अस्थरिता को दर्शाता है । [कट्टरपंथी इस्लामी ताकतों की संभावति वापसी बांग्लादेश के धर्मनरिपेकष शासन को खतरे में डाल सकती है ।](#)
- नरियात प्रवाह में व्यवधान: बांग्लादेश का कपडा कषेत्र, जो इसके नरियात राजस्व में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है, बड़े व्यवधानों का सामना कर रहा है । चल रही अशांतिके कारण आपूर्ति शृंखलाएँ टूट गई हैं, जिससे माल की आवाजाही और उत्पादन कार्यक्रम प्रभावति हो रहे हैं ।
 - बांग्लादेश वैश्वकि वस्त्र उद्योग, कपडों के वैश्वकि व्यापार का 7.9% हसिसा है । देश का 45 बलियिन अमेरिकी डॉलर का परधान कषेत्र, जिसमें चार मलियिन से अधिकि कर्मचारी कार्यरत हैं, इसके व्यापारकि नरियात का 85% से अधिकि प्रतनिधित्व करता है ।
 - बांग्लादेश में अनश्चितिता के कारण अंतरराष्ट्रीय करेता अपने आपूर्ति स्रोतों का पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं । इसके परणामस्वरूप भारत सहति वैकल्पकि बाजारों में ऑर्डर का स्थानांतरण हो सकता है ।
 - अगर भारत, बांग्लादेश से वसिथापति ऑर्डर का एक हसिसा हासलि कर लेता है तो उसे काफी फायदा हो सकता है । उद्योग वशिषज्जों का अनुमान है कि अगर बांग्लादेश के कपडा नरियात का 10-11% तरिपुर जैसे भारतीय केंद्रों को पुनर्नरिदेशति कयिा जाता है तो भारत को मासकि कारोबार में 300-400 मलियिन अमरीकी डॉलर का अतरिकित लाभ हो सकता है ।

बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थरिता का भारत पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- एक साझेदार की हानि: भारत ने शेख हसीना के रूप में एक महत्त्वपूर्ण साझेदार खो दिया है, जो [आतंकवाद का मुकाबला](#) करने और [द्वपिकषीय संबंघों](#) को मज़बूत करने में आवश्यक भूमिका नभिया रही थी ।
 - हसीना के नेतृत्व में भारत को सुरक्षा मामलों पर बांग्लादेश के साथ मलिकर काम करने का अवसर मलिया, लेकिन राजनीतिक गतशीलता में बदलाव के कारण अब यह संबंघ खतरे में है ।
 - वतिव वर्ष 2023-24 में भारत-बांग्लादेश द्वपिकषीय व्यापार 13 बलियिन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, जिससे बांग्लादेश उपमहाद्वीप में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार बन गया । हसीना के प्रशासन के तहत [दकषणि एशियाई मुकत व्यापार](#)

समझौता (South Asian Free Trade Area- SAFTA) समझौते के तहत अधिकांश टैरिफ लाइनों पर शुल्क मुक्त पहुँच प्रदान की गई थी।

- उनके प्रशासन के प्रति भारत का समर्थन अब एक दायित्व बन गया है, क्योंकि उनका अलोकप्रयिता और वविदास्पद शासन भारत की कषेत्रीय स्थिति को प्रभावित कर सकता है।
- **पश्चिमी देशों की जाँच और संभावित प्रतिक्रिया:** हसीना को भारत के समर्थन ने पश्चिमी सहयोगियों, खास तौर पर अमेरिका के साथ टकराव पैदा किया है, जिसने उनकी अलोकतांत्रिक गतिविधियों की आलोचना की है। अब अलोकप्रयि नेता का समर्थन करते हुए अंतरराष्ट्रीय संबंधों को संतुलित करना भारत के लिये चुनौती है।
 - हसीना की बढ़ती अलोकप्रयिता के कारण भारत को बांग्लादेशी नागरिकों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है, जो भारत को अपदस्थ नेता का सहयोगी मानते हैं। यह स्थिति भारत-बांग्लादेश संबंधों को प्रभावित कर सकती है।

भारत के लिये बांग्लादेश का महत्त्व

- यह देश व्यापार और परिवहन के लिये एक महत्त्वपूर्ण गलियारे के रूप में कार्य करता है, जो पूर्वोत्तर भारत को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ता है और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच को सुविधाजनक बनाता है।
- क्षेत्रीय सुरक्षा के लिये एक स्थिर और मैत्रीपूर्ण बांग्लादेश आवश्यक है। आतंकवाद-रोधी, सीमा सुरक्षा तथा अन्य सुरक्षा मामलों पर सहयोग दक्षिण एशिया में शांति बनाए रखने के लिये महत्त्वपूर्ण है।
- **बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है** और भारत एशिया में बांग्लादेश का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है।
 - यह आर्थिक संबंध भारत की वदेश व्यापार नीति के लक्ष्यों का समर्थन करता है तथा 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के उसके लक्ष्य में योगदान देता है।
- भारत और बांग्लादेश के बीच सक्रिय सहयोग **बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिये बंगाल की खाड़ी पहल (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation- BIMSTEC)** और **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (South Asian Association for Regional Cooperation- SAARC)** जैसे क्षेत्रीय मंचों की सफलता हेतु महत्त्वपूर्ण है।

नई व्यवस्था के साथ जुड़ने में भारत के सामने क्या चुनौतियाँ हैं?

- **अनश्चिति राजनीतिक वातावरण:** नई सरकार की प्रकृति, चाहे उसका नेतृत्व वपिक्षी दल करें या सेना, भारत के सामरिक हितों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालेगी।
 - भारत के प्रति कम मैत्रीपूर्ण रवैया रखने वाला नया प्रशासन भारत वरिधी उग्रवादी समूहों को फरि से सक्रिय कर सकता है, जिससे सीमाओं पर पहले से ही तनावपूर्ण सुरक्षा स्थिति और भी तनावपूर्ण हो सकती है।
 - यदि **इस्लामी चरमपंथ** बढ़ता है तो हद्द अल्पसंख्यकों को अधिक जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। भारत को क्षेत्रीय तनाव से बचने के लिये हद्द शरणार्थियों के लिये नागरिकता के वादों पर सावधानीपूर्वक कार्य करना चाहिये।
- **क्षेत्रीय भू-राजनीति:** बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता **चीन को इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने का अवसर प्रदान कर सकती है।**
 - भारत को सतर्क रहना चाहिये क्योंकि बीजिंग नई सरकार को आकर्षक सौदे दे सकता है, ठीक उसी तरह जैसे उसने श्रीलंका और मालदीव में शासन परिवर्तनों का लाभ उठाया है।
 - भारत को यह सुनिश्चित करने के लिये रणनीतिक साझेदारियों में शामिल होना होगा कि **उग्रवादी तत्त्वों को बढ़ावा न मिले** और बांग्लादेश की आर्थिक स्थिरता बनी रहे।
 - बांग्लादेश में उथल-पुथल ऐसे समय में आई है जब भारत कई मोर्चों पर चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसमें **कश्मिर के साथ तनाव, म्यांमार में अस्थिरता, नेपाल के साथ तनावपूर्ण संबंध, अफगानिस्तान और मालदीव में तालिबान द्वारा सत्ता पर कब्जा** करना शामिल है।
- **भारतीय नविश पर प्रभाव:** राजनीतिक उथल-पुथल के कारण बांग्लादेश में भारतीय व्यवसायों और नविशों को अनश्चितताओं का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में व्यवधान और भुगतान में देरी **इन नविशों की लाभप्रदता और स्थिरता को प्रभावित कर सकती है।**
 - यह अशांति बांग्लादेश में भारतीय स्वामित्व वाली कपड़ा निर्माण इकाइयों को प्रभावित करेगी। **बांग्लादेश में लगभग 25% कपड़ा इकाइयाँ भारतीय कंपनियों के स्वामित्व में हैं।** संभावना है कि मौजूदा अस्थिरता के कारण ये इकाइयाँ अपना परिचालन वापस भारत में स्थानांतरित कर सकती हैं।
 - अक्टूबर 2023 में संभावित **मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** के बारे में चर्चा शुरू होने के साथ ही उम्मीदें बढ़ गई हैं कि इससे भारत में बांग्लादेश के निर्यात में 297% और भारत के निर्यात में 172% तक की वृद्धि हो सकती है।
 - हालाँकि, राजनीतिक अस्थिरता इन वार्ताओं के भविय के बारे में संदेह पैदा करती है और मौजूदा व्यापार प्रवाह को बाधित कर सकती है।
- **बुनियादी ढाँचे और कनेक्टिविटी की चिंताएँ:** भारत-बांग्लादेश संबंधों को मज़बूत करने में बुनियादी ढाँचे और कनेक्टिविटी की अहम भूमिका रही है। भारत ने वर्ष 2016 से **सड़क, रेल और बंदरगाह परियोजनाओं के लिये 8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण दिया है, जिसमें अखौरा-अगरतला रेल लकी एवं खुलना-मोंगला पोर्ट रेल लाइन शामिल है।**
 - हालाँकि, मौजूदा अशांति इन महत्त्वपूर्ण संपर्कों को खतरे में डालती है, जिससे भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यापार और पहुँच बाधित हो सकती है और पहले के समझौते खतरे में पड़ सकते हैं।
- **संतुलन:** भारत को लोकतांत्रिक ताकतों का समर्थन करने और क्षेत्रीय शक्तियों के साथ संबंधों को प्रबंधित करने के बीच संतुलन बनाना

चाहिये।

- चुनौती यह होगी कि बांग्लादेश में मजबूत राजनयिक उपस्थिति बनाए रखते हुए आंतरिक विवादों में उलझने से बचा जाए।

भारत को अपनी वदेश नीतिको आगे बढ़ाने के लिये क्या करना चाहिये?

- **नए गठबंधन बनाना:** भारत एक सतर्क दृष्टिकोण बनाए हुए है, बांग्लादेश में स्थिति पर बारीकी से नज़र रखते हुए "प्रतीक्षा करें और देखें" की रणनीति अपना रहा है। इसमें क्षेत्रीय स्थिरता पर विकास और उनके संभावित प्रभावों का आकलन करना शामिल है।
 - इसके अलावा, भारत को बांग्लादेश में विभिन्न राजनीतिक गुटों के साथ जुड़ना चाहिये, ताकि अधिक समावेशी संबंध विकसित हो सकें। भारत को एक लचीली रणनीति विकसित करनी चाहिये जो बांग्लादेश में विकसित हो रहे राजनीतिक परदृश्य को समायोजित कर सके।
 - भारत के बारे में किसी भी नकारात्मक धारणा का मुकाबला करने के लिये बांग्लादेशी समाज के व्यापक स्पेक्ट्रम के साथ जुड़ना महत्त्वपूर्ण होगा। भारत को वर्ष **1971 की मुक्त कथा से आगे बढ़ने की ज़रूरत है।**
- **सुरक्षा उपायों को बढ़ाना:** भारत को संभावित स्पिलओवर प्रभावों को कम करने और स्थिरता बनाए रखने के लिये सीमा पर तथा महत्त्वपूर्ण बांग्लादेशी प्रवासी आबादी वाले क्षेत्रों में अपने सुरक्षा उपायों को और मजबूत करना चाहिये।
- **डजिटल कनेक्टिविटी कॉरिडोर:** डजिटल कनेक्टिविटी कॉरिडोर विकसित करने से व्यापार, तकनीकी आदान-प्रदान और ई-कॉमर्स को बढ़ावा मिल सकता है।
 - नए राजनीतिक माहौल के मद्देनजर बांग्लादेश के साथ FTA की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करना।
- **भू-राजनीतिक पैतरेबाजी:** भारत को यह अनुमान लगाना चाहिये कि पाकिस्तान और चीन बांग्लादेश की स्थिति से फायदा उठाने की कोशिश करेंगे।
 - इन जोखिमों को कम करने के लिये अमेरिका, ब्रिटन और यूरोपीय देशों सहित अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग करना महत्त्वपूर्ण होगा।
 - भारत को **बांग्लादेश के आर्थिक स्थिरीकरण और चरमपंथी प्रभावों का मुकाबला करने** के लिये यूई और सऊदी अरब जैसे खाड़ी भागीदारों के साथ कार्य करना चाहिये। यह सहयोग क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने और बांग्लादेश को अपने पारंपरिक सहयोगियों से दूर जाने से रोकने में मदद कर सकता है।

दृष्टि मनेस प्रश्न:

प्रश्न: भारत के पड़ोसी देशों में लगातार राजनीतिक अस्थिरता के क्या परिणाम हैं? बांग्लादेश में हाल की राजनीतिक अस्थिरता के आलोक में चुनौतियों का मूल्यांकन कीजिये।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????:

प्रश्न. नयित्रण रेखा (LoC) सहित म्याँमार, बांग्लादेश और पाकसितान की सीमाओं पर आंतरिक सुरक्षा खतरों तथा सीमा पार अपराधों का विश्लेषण कीजिये। इस संबंध में विभिन्न सुरक्षा बलों द्वारा नभिई गई भूमिका पर भी चर्चा कीजिये। (2018)